शब्द–ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

E ISSN 2320 – 0871

17 अक्टूबर 2016

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप

ममता वर्मा (शोधार्थी)

भाषा अध्ययनशाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

व्यंग्य मुख्यतया आधुनिक हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय घटना है। बीसवीं षताब्दी के हिन्दी गद्य में अनेक शैलियाँ, जीवन दृष्टियों और विधाओं का प्रादुर्भाव हुआ और विकास हुआ। हिन्दी साहित्य जगत में व्यंग्य के अंतर्गत हास्य रस को आत्मानन्द की अनुभूति का माध्यम माना गया है। वास्तव में व्यंग्य सोद्देश्य होता है। इसके द्वारा लेखक सदैव हँसी के माध्यम से दण्ड देना चाहता है, या चाहा करता है। अतः स्वाभावतः उनमें कुछ चिड़चिड़ापन आ जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी साहित्य में व्यंग्य की स्वरुप पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

अंग्रेजी के बहुप्रचलित शब्द 'सेटायर' का हिन्दी रूप 'व्यंग्य' है। 'सेटायर' का जन्म दृश्य काव्य से हुआ। इसका विकास लेटिन भाषा के 'सेतुरा' शब्द से हुआ, जिसका आशय 'परनिन्दा' से लिया जाता था। आज सेटायर शब्द का प्रयोग समाज में छिपी बुराईयों और विसंगतियों को उजागर करने के लिए किया जाता है। व्यंग्य की अपनी प्रक्रिया होती है। आज के व्यापक असंतोष की अभिव्यक्ति का माध्यम व्यंग्य सबसे अधिक विश्वसनीय और कारगर विपक्ष है। इसी के संदर्भ में डॉ. शिवकुमार मिश्र ने लिखा है, "व्यंग्य ऊपर से देखने में कितना भी आक्रामक, धारदार हथियार क्यों ना हो, उसकी नींव में हमेशा एक गहरी संवेदना होती है। जमीन से उगकर ही अपना समूची आक्रामकता के बावजूद व्यंग्य हमारा प्रिय बनता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य और व्यंग्य

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास के साथ-साथ व्यंग्य ने भी अपना विकास किया है। खड़ी बोली को साहित्यिक भाषा का दर्जा दिलाने वालों ने व्यंग्य के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों पर अपने तीखे शब्द बाणों से प्रहार किया है, सत्ता प्रतिश्ठानों की लालफीताशाही, नेताओं की धूर्तता, पाशविकता, देशद्रोह और अनैतिकता, चुनावी हथकण्डे पुलिस का विभत्स आचरण, आधुनिक प्रेम का सतहीपन, जात-पात, बेकरी, गरीबी, अनगिनत विषयों की चीर-फाड़ व्यंग्यकारों ने की है। प्रत्येक प्रकार के दोषयुक्त पहलू का सही चित्रण उस पर प्रहार और एक झटका व्यक्ति की चेतना को देना व्यंग्य का उद्देश्य होता है। व्यंग्य ने हिन्दी की सबसे बड़ी सेवा की है। वह यह कि उसने पाठकों का एक वर्ग तैयार किया है, जो व्यंग्य के बारीक इशारों को समझता है। व्यंग्य के लक्ष्य और गहराई तक पहुँचता है।

व्यंग्य के बारे में डॉ. गौतम कहते हैं कि "आज हिन्दी का व्यंग्य साहित्य पूर्व की तरह ना तो दरिद्र है, और ना ही अस्तरीय, ना उसे फूटकर खाते में डाले जाने योग्य साहित्य कहकर उसकी अपेक्षा की जा सकती है, अपितु आज का व्यंग्य

अधिकाधिक तीक्षण, गंभीर एवं दूसरी साहित्य विधाओं की तुलना में सबसे अधिक समाज धर्मी साहित्य विद्या है, व्यंग्य आज एक सम्पूर्ण युग के माहौल और सन्दर्भ में प्रस्तुत होने लगा है।

आज के साहित्यकारों में व्यंग्य एक प्रमुख विद्या के रूप में विद्यमान है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग में ही अपनी चेतना और प्रगतिशीलता के कारण व्यंग्य का उपयोग हो रहा है, जो वर्तमान तक अनवरत होता आ रहा है। व्यंग्य के संबंध में श्रीकांत चौधरी ने लिखा है, “व्यष्टि से समष्टि तक की सभी अप्राकृतिक मानवीय क्रिया कलापों के प्रति बौद्धिक विद्रोह ही व्यंग्य है, बुद्धि की पैनी और चुटीली प्रतिक्रिया है।” व्यंग्य साहित्य की एक विधा है, शैली है, अभिव्यक्ति का तीखापन है, साथ ही सुधार की प्रक्रिया का प्रारंभिक रूप भी है। यद्यपि भारतीय साहित्य के सन्दर्भ में व्यंग्य को उच्च कोटि का साहित्य कभी नहीं कहा गया है, पर एक उक्ति वैचित्र्य और व्यंग्यपरक कथनों में व्यंग्य की स्वतः उपस्थित हो जाती है। व्यंग्य शब्द के बहुत से समानार्थी शब्द भी हैं, जिनको प्रायः लोग व्यंग्य के स्थान पर प्रयोग किया करते हैं जैसे कि हास, उपहास अथवा पैरोडी।

व्यंग्य का आधार है और इस सन्दर्भ में यह एक सार्थक स्वस्थ, बौद्धिक विद्रोह है। व्यंग्य व्यक्तिगत कुण्ठा या संगास का परिणाम कभी नहीं हो सकता। “कबीर के शब्दों में कहें तो व्यंग्य की मार बाहर से तो नहीं दिखाई पड़ती पर भीतर से चकनाचूर कर देती है।” बाहर घाव ना दिखाई भीतर गीत या कविता में यह संभव है, पर व्यंग्य के लिए निज आवश्यक नहीं है।

“कबीर की दृष्टि में धर्म, प्रेम से ओत-प्रोत प्रभु प्राप्ति की भावदशा विशेष है, फिर किसी की अगुवाई कैसी। इसिलए प्रख्यात समीक्षक रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कबीर के व्यंग्य कथनों को समाज से जोड़ते हुए कहा है कि “अपने कृतित्व को समाज से मिलाकर और अपने व्यक्तित्व को रचना से अभिन्न करके कबीर सच्चे अर्थों से सुकवि है।”

पोथी पढ़-पढ़-जग मुआ, पंडित भया ना कोय।ढाई आखर प्रेम का पढे सो पंडित होय।

इस प्रकार कबीर की व्यंग्योंक्तियाँ सीधे समाज से जुड़कर एक सुधारात्मक पहल करती दिखाई पड़ती हैं। उनके समक्ष मुख्य रूप से धर्म का विशाल साहित्य था। धर्मानुसार बना वह मानव समाज भी था। समाज की विकृतियाँ भी और रूढ़िवादी प्रवृत्तियाँ भी। कबीर ने किसीको बख्शा नहीं। सब पर उनका व्यंग्य चलता रहा, और सामाजिक सन्दर्भ में उनका साहित्य जुड़ता रहा।

व्यंग्य साहित्य का सीधा संबंध समाज से है, उसकी विकृतियों और विदूपताओं से है, उसकी कमियों और अभावों से है। आधुनिक साहित्य के संदर्भ में व्यंग्य और ताकतवर होकर उभरा है। हरिशंकर परसाई के अनुसार “व्यंग्य विधा नहीं बल्कि स्पिरिट है।”

व्यंग्य समकालीन जीवन से जुडे यथार्थ का गंभीर विश्लेषण है और उसके उद्‍घाटन का माध्यम भी है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है। सार्थक व्यंग्य में करूणा की अन्तर्धारा होती है। व्यंग्य शब्द दो अर्थ देता है। एक व्यंग्य का अर्थ है - अभिधा लक्षणा से हटकर व्यंजनाध्वनि जैसे - करोड़ पति को लंकापति कहते हुए ऐसा कहना कि आज के लंकापति अयोध्या पति की तरह पूजे जाते हैं। लंकापति और अयोध्यापति प्रचलित शब्द अर्थ से हटकर इस वाक्य में नया अर्थ देने लगते हैं। तो बात कुछ और ही बन जाती है। व्यंग्य का दूसरा अर्थ है - विरूपता दर्शन यह हमारे दोषों को,

खामियों को, दुर्बलताओं को उभारकर सामने रखता है। विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा अपने-अपने ढंग से की है। डॉ.रामकुमार वर्मा के अनुसार आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तु को विकृत कर उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है। शरद जोशी के अनुसार जब तक दुनिया नहीं सँवरती यह व्यंग्य लिखा ही जाता रहेगा।

मेरिडिथ के अनुसार यदि आप हास्यापद का इतना अधिक मजाक उड़ाते हैं कि उसमें दयालुता ही समाप्त हो जाए, तो आप व्यंग्य की सीमाओं में प्रवेश कर आते हैं।

व्यंग्य प्राचीन काल से ही एक कला के रूप में अस्तित्व में है। कई यूनानी नाटककार ने अपने समय की परम्पराओं को मजाक ग्रंथो में लिखा। आज का व्यक्ति प्रगतिशील है। व्यंग्य प्रगतिशील मनुष्य की सहज मानसिक प्रक्रिया है। यही कारण है कि व्यंग्य रचनाएँ दिनानुदिन बढ़ती जा रही हैं। कथा साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, जिस साहित्य में व्यंग्य नहीं होता वह बहुत नीरस होता है, व्यंग्य साहित्य की बहुत ही समर्थ और विशेष रूप से सामाजिक विधा है, दिशा काल में जहाँ तक झूठे आडम्बर की और पाखण्ड की व्याप्ति है, वहाँ व्यंग्य का अपना एक क्षेत्र है।

निष्कर्ष

व्यंग्य का प्राण यर्थार्थ है, वह विसंगतियों और विदूपताओं की भूमि को अपना उत्सव मानकर पनपता है, तथा उसके स्वरूप के अनुसार हास्य, वागविदग्ध, वर्गीकृत, उपहास, कटाक्ष, कटूक्ति और वाक्दोष जैसे नाना प्रकार के व्यंग्यास्त्रों का चयन करता है। व्यंग्यकार शल्य चिकित्सक है जल्लाद नहीं। उसकी चोट एक गुण्डे की चोट न होकर गुरू की चोट होती है, न्यायाधीश द्वारा दिया जाने वाला दण्ड हो उसका औचित्य है, आज की घनीभूत विसंगतियों के परिवेश में व्यंग्य ही एक कारगर हथियार के रूप में अपनी महत्ता एवं लोकप्रियता को भी सिद्ध करता हुआ विकसित हो रहा है। आज की राजनैतिक अपाधापी कुर्सी के पीछे अंधी दौड़ चारित्रिक पतन, मल्य हीनता सामाजिक एवं मानवीय गुणों का ह्रास, शोषण अन्याय, घिनौनी वृत्तियों, प्रवृत्तियों आये लोगों की त्रासदी और सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक मूल्यों में गिरावट, दोगलापन आदि के कारण व्यंग्य लेखन की अनिवार्य और उपयोगिता बढ़ती जा रही है। आज व्यंग्य अन्य विधाओं पर हावी होता हुआ, एक स्वतंत्र तथा पूर्ण विधाओ के रूप में अपनी प्रमुख स्थापनाओं का अहसास करा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1 गद्य के विविध रूप, माजदा असद

2 हिन्दी स्वतांत्रयोत्तर हास्य और व्यंग्य, बालेन्दु शेखर

3 वीणा मासिक पत्र लेख, आनन्द गौतम

4 व्यंग्य साहित्य वर्तमान सन्दर्भ में एक विवेचन, श्रीकान्त चौधरी

5 व्यक्तित्व एवं कृतित्व:- हरिशंकर परसाई, डॉ.मनोहर देवलिया

6 हिन्दी व्यंग्य का उपन्यास साँतवा दशक, नंदलाल कल्ला

7 रिमझिम, डॉ.रामकुमार वर्मा

8 व्यंग्य शती अप्रैल, शरद जोशी